Pg 2 (Sub)

शेरखां की शक्ति में वृद्धि

बिहार पर अधिकार → शेरखाँ 1528 ई० में बाबर की नौकरी छोड़कर पुन: बहार खां की सेवा में आ गया। कुछ समय बाद बहार खां की मृत्यु होने पर उसकी बेगम दूदू बीबी ने उसे बिहार का नायब सूबेदार नियुक्त किया, अब शेरखां अपनी शक्ति बढ़ाने लगा। उसने उच्च पदों पर अपने विश्वास पात्र अफगान सरदारों को नियुक्त किया तथा सेना को अपने विश्वास में ले लिया। इसके बाद वह सम्पूर्ण बिहार का शासक बन गया। उसने चुनार के सूबेदार ताजखां की विधवा बेगम लाड मलिका से विवाह कर चुनार का दुर्ग तथा बहुत सा धन प्राप्त किया।

बंगाल विजय – बंगाल का शासक महमूदशाह शेरखां की बढ़ती शक्ति से आशंकित था। बिहार से भागकर आये लोहानी सरदारों ने भी उसे शेरखां के विरुद्ध भड़काया। शेरखां ने बंगाल पर आक्रमण कर सूरजगढ़ नामक स्थान पर महमूदशाह को पराजित किया। शेरखां ने बंगाल की राजधानी गौर को घेर लिया और अधिकार कर सारे धन व परिवार को रोहतासगढ़ के दुर्ग में भेज दिया।

हुमायूँ पर विजय – अब शेरखां ने हुमायूं से निपटने का निश्चय किया। उसने बनारस नामक स्थान पर हुमायूँ से एक समझौता किया जो सिर्फ तीन दिन चला। हुमायूँ ने समझौता भंग करते हुए बंगाल पर

P.T.O

आक्रमण कर दिया। शेरखां ने उसे बिना रोक-टोक बंगाल पर अधिकार करने दिया। हुमायूँ शेरखां की चालाकी को नहीं समझ सका। वह गौड़ में रंगरेलियों में डूब गया। इसी समय शेरखां ने बिहार से मुगल सेना को खदेड़ दिया एवं मुगलों के आवागमन के मार्ग काट दिये। फलस्वरूप हुमायूँ से खुले युद्ध के लिए तैयार हो गया।

चौसा का युद्ध (1539) → हुमायूँ की जब आँख खुली, तब तक वह चारों तरफ से घिर चुका था। शेरखां ने 26 जून 1539 ई० को हुमायूँ को चौसा के मैदान में बुरी तरह परास्त किया। हुमायूँ जान बचाकर किसी तरह आगरा पहुँचा। एक ही झटके में उसने बंगाल और बिहार के साथ जौनपुर को भी अपनी स्वतंत्र राजसत्ता में कर लिया और ~~स्वतंत्र~~ तथा शेरखां ने शेरशाह की उपाधि धारण की और बंगाल व बिहार का स्वतंत्र शासक बन गया।

कन्नौज का युद्ध → (1540 ई)

हुमायूँ सेना एकत्रित करके युद्ध करने के लिये 17 मई, 1540 ई० को शेरखां से युद्ध करने कन्नौज पहुँचा, किन्तु वह पुनः परास्त हुआ। कन्नौज की विजय के बाद शेरशाह ने हुमायूँ को भारत से खदेड़ दिया एवं आगरा, दिल्ली एवं पंजाब पर अधिकार कर लिया। इसप्रकार मुगलवंश के स्थान पर सूरवंश की स्थापना हुई।